आपकी कविताओं के लिए धन्यवाद

२७ दिसम्बर, २०२२

आत्मीय पाठक,

आपको *लगभग* -नववर्ष की पूर्वसन्ध्या की शुभकामनाएँ!

क्या आपको विश्वास हो रहा है कि इस वर्ष का समापन नज़दीक आ रहा है? हर वर्ष, जब त्यौहारों के मौसम का उत्साह छा जाता है, तब भी मैं खुद से यह सवाल पूछती हूँ। और हर वर्ष, जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो मुझे यह लगता है कि सिद्धयोग पथ पर जो कुछ उन्मीलित होता रहा है, उसका भलीभाँति वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं, मैं बस इतना ही कह सकती हूँ, *क्या शानदार रहा यह वर्ष!*

और वर्ष २०२२ के लिए भी यही बात सच है। ख़ासकर, इस वर्ष का समापन तो ऐसा लग रहा है मानो यह प्रकाश के साथ मिलकर नृत्य कर रहा हो—एक ऐसी सतरंगी छटा जो उन कविताओं ने बिखेर दी है जिन्हें आपने मेरे इस माह के पिछले पत्र के उत्तर में लिखा है। उस पत्र में मैंने आपको आमन्त्रित किया था कि आप वर्ष २०२२ के लिए श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करें। उस समय आपके पास एक सुअवसर भी था, श्रीगुरुमाई की सुन्दर कविता, "अपने श्रीगुरु से एक प्रार्थना" को पढ़ने का, जिसकी रचना उन्होंने सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के अपने एक अनुभव को अभिव्यक्त करने के लिए की है।

कविता के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में मैं कुछ बताना चाहती हूँ, जिससे आप यह जान सकेंगे कि मुझे आपकी कविताएँ इतनी अर्थपूर्ण क्यों लगीं। मैं जीवनभर कविताएँ पढ़ती आई हूँ, और पिछले दस वर्षों में तो मैंने अपना काफ़ी समय कविताएँ लिखते हुए बिताया है, विशेषकर तबसे, जबसे मुझे ऐसा लगने लगा कि गुरुमाई जी की सिखावनियों से जुड़े मेरे अनुभव और साधना की मेरी अन्तर्दृष्टियाँ गद्यरूप में सटीकता से व्यक्त ही नहीं हो पा रही हैं, जिसमें लिखने की मैं अधिक अभ्यस्त थी। कविता मेरे लिए खोज का एक मंच व क्रीड़ास्थल बन गई। यह मेरे लिए एक घर जैसी हो गई जहाँ, मैं जैसी हूँ वैसी बनी रह सकती हूँ और खोज सकती हूँ कि यह 'मैं' है कौन।

कभी-कभी जब मैं अन्य कवियों की कृतियों को पढ़ती हूँ तो ये मुझे इसी स्थान में वापस ले आती हैं जिसे मैं घर कह रही हूँ। तो कल्पना करें कि यह देखकर मुझे कितना आनन्द हुआ होगा जब मैं 'श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स्' पर लिखी आपकी कविताएँ पढ़ रही थी तो वे मुझे बार-बार यहीं वापस ला रही थीं।

मैंने सुना है कि एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग में सभी उम्र के सिद्धयोगियों से व विश्व के सभी भागों से कविताएँ आई हैं—ऑस्ट्रेलिया से लेकर स्विट्ज़रलैन्ड तक, जापान से लेकर अमरीका तक; भारत, साउथ अफ़्रीका, तुर्की, ब्राज़ील, इटली, जर्मनी, फ़्रांस से। सूची बहुत लम्बी है। इतना ही नहीं, आपमें से कुछ लोगों ने एक से अधिक कविताएँ भेजी हैं। वास्तव में, आपकी *सौ* से भी अधिक कविताएँ सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर प्रकाशित हो चुकी हैं। एक लेखिका होने के नाते मैं यह जानती हूँ कि जब रचनात्मकता का प्रवाह एक बार आरम्भ हो जाता है तो वह रुकता ही नहीं—इसलिए मैं आत्मविश्वास के साथ यह कह सकती हूँ कि वर्ष २०२३ में प्रवेश करते हुए, आपको साधना के अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने के और भी नए व प्रेरणादायी तरीक़े मिलते रहेंगे।

आज आपको यह पत्र लिखने का मुख्य कारण है, आपको हृदय से उसके लिए धन्यवाद देना, जो आपने दिया है—अपना प्रेम, अपनी भक्ति, सिद्धयोग पथ के प्रति अपनी वचनबद्धता, सिद्धयोग साधना के प्रति अपना समर्पण, आपने जो सीखा उसके फल और आपको जो प्राप्ति हुई, उसका प्रसाद—इन सब के लिए आपको धन्यवाद। यह सब कुछ उन कविताओं में स्पष्ट रूप से झलक रहा था जो आपने वर्ष २०२२ के लिए श्रीगुरुमाई की सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् के विषय पर लिखी हैं।

और जो कुछ मैंने आपमें से कुछ से सुना, उसे देखते हुए यह और भी अधिक हृदयस्पर्शी हो गया—कि आपको यह प्रयास बिल्कुल नया लगा; कि शायद आपने पहले कभी अपने आपको कवि या लेखक नहीं समझा था। मैं यह भी स्वीकार करना चाहती हूँ कि एक कविता कितनी व्यक्तिगत हो सकती है—किस तरह उसकी लय, उसके पीछे का तर्क, उसका सौन्दर्य, उसका अर्थ ऐसा प्रतीत हो सकता है जैसे वह आपका अपना ही प्रसार, आपका अपना ही विस्तृत रूप हो। दूसरों के साथ अपनी कविताएँ बाँटते हुए, आप अपना एक भाग बाँट रहे थे, कुछ ऐसा जो बहुत ख़ास और दिव्य है, आपके अन्तरतम जगत की एक झलक है।

और आपने यहाँ सचमुच ऐसा किया, निडरता के साथ, उत्साह के साथ, अन्तःप्रेरणा और कौशल के साथ आपने यह कर दिखाया। जिस तरह गोपियाँ भगवान श्रीकृष्ण की बाँसुरी सुनकर प्रतिक्रिया देतीं,

वैसे ही आप भी श्रीगुरु के शब्दों को सुनकर उनका पालन करने के लिए तत्पर हो गए। वर्ष २०२२ के अपने नववर्ष-सन्देश में, गुरुमाई जी कहती हैं, "सुनो . . .," और आपने वही किया। आपने सुना।

इसके फलस्वरूप, पिछले कुछ सप्ताहों में जिसने भी सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखी, वह आपकी भरपूर उदारता से लाभान्वित हो सका। मेरे सिद्धयोगी मित्रों ने मुझे बताया है कि वे आपकी कविताओं से कितने प्रेरित हुए और दूसरों को कविताएँ लिखते देखकर *उन्हें* भी ऐसा करके देखने की प्रेरणा मिली, कि वे भी सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् पर एक कविता लिखने में ज़रा अपना हाथ आज़माकर तो देखें।

और कम-से-कम मैंने तो यह अनुभव किया है कि आपकी कविताओं को पढ़कर, मैंने सीज़न्स् ग्रीटिंग्स् की उन चीज़ों पर और अधिक ग़ौर किया है, जिन पर मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था और—मैंने नहीं सोचा था कि ऐसा भी हो सकता है—इसलिए मैं इसकी और अधिक सराहना कर रही हूँ। जब मैंने पहली बार आपको कविताएँ लिखने के लिए आमन्त्रित किया था, तब मैंने यह सोचा भी नहीं था कि आप, मेरे सह-सिद्धयोगी, अपने उदार हृदय व प्रतिभा से मुझे बिलकुल ही अचम्भित कर देंगे। यह मुझे एक बार फिर याद दिलाता है कि सिद्धयोग पथ पर मैं कितना सौभाग्यपूर्ण जीवन जी रही हूँ—हम सब कितना सौभाग्यपूर्ण जीवन जी रहे हैं।

गुरुमाई जी, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। और, आप सभी को धन्यवाद।

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।